Knowledgeable Research –Vol.1, No.9, *April 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

छत्तीसगढ़ में सामाजिक धार्मिक और आर्थिक आंदोलन के प्रणेता गुरु घासीदास जी

[1]गणेश कोशले (शोधार्थी)
[2]घनष्याम दुबे (सह.प्राध्यापक)
इतिहास विभाग,
गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय,
कोनी बिलासपुर (छ.ग.)
Email: ganeshkoshle@gmail.com

****

सारांश

छत्तीसगढ़ में उस समय दलित, शोषित, पीड़ित असंख्य लोगों का जीवन बड़ा ही दुरूखमय था समाज में छुआछूत, ऊँच–नीच का भेदभाव व्याप्त था। मन्दिरों में धर्म–कर्म के नाम पर नरबलि और पशुबलि की परम्परा प्रचलित थी। मठ और मन्दिर अनाचार का केन्द्र बने हुए थे नारी जाति के प्रति शोषण का भाव मन्दिरों में देखने को मिलता था तन्त्र–मन्त्र, टोनही, बैगा, पंगहा आदि अन्धविश्वास के नाम पर लोगों को ठगा जा रहा था। धार्मिक साधना का रूप काफी विकृत हो गया था, धार्मिकता की आड़ में लोग मांस और मदिरा का सेवन कर रहे थे। यहां के लोग राजाओं, सामंतो, पिंडारियों, सूबेदारों के लूट और आतंक से बहुत परेशान थे लगान और राजस्व वसूली ने उनकी कमर तोड़कर रख दी थी। ऐसे समय में छत्तीसगढ़ की धरती पर संत शिरोमणि गुरु घासीदास जी का जन्म ग्राम गिरौदपुर में होता है उन्होंने 'सतनाम पंथ' की स्थापना किया तथा उन्होंने ब्राम्हणवाद के प्रभुत्व को नकारा और वर्णों में बांटने वाली जाति व्यवस्था का विरोध किया। समाज में व्याप्त जात–पात, छुआछूत, जातिगत विषमताओं के विरुद्ध श्मानव–मानव एक समानश का संदेश दिया। समाज में प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक रूप से समान हैसियत रखता है। गुरू घासीदास ने मूर्ति पूजा को वर्जित किया। उन्होंने समाज में एक नई सोच और विचार उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

शोध बीज *विकृत, अन्धविश्वास, सतनाम, हैसियत, टोनही, सामंतो, पिंडारियों, सूबेदारों, विषमताओं, बैगा।*

****

गुरु घासीदास जी के इतिहास को पढ़ते हैं तो लोग असमंजस में पड़ जाते है कि, कौन सा सही, कौन सा गलत और यह स्वाभाविक है। इतिहास की दृष्टि से देखें तो विश्व में तलवार और कलम, इन दोनों का महत्व रहा है। अतंर यह रहा कि एक ने ध्वंस किया और दूसरे ने सृजन। यही संत गुरु घासीदास जी के इतिहास से हैं, दुखद स्थिति रही की कुछ चाटूकारों तथा कुछ समाज के लेखकों ने गुरु घासीदास को चमत्कारी बाबा घोषित कर उनके व्यक्तित्व को एकांगी बना दिया। सवर्ण लेखकों तथा इतिहासकारों ने तो घासीदास को हिंदुत्व के रंग में रंगने में कोई कोर कसर छोड़ी ही नहीं। उनका जीवन ऐसी पहेली बना दिया गया कि बहुजन समाज के लोग जितना पहेलियों को हल करने का आज प्रयास करते हैं, उतना ही वे उनमें उलझते जाते हैं।

गुरु घासीदास के चले जाने के बाद वर्तमान स्थिति को देखे तो जिस प्रकार अन्य प्रमुख धर्मों में विभिन्न शाखाएं हैं, ठीक उसी प्रकार वर्तमान में सतनामीयों में भी दो प्रकार की शाखाओं का विकाश हो चुकी हैं। जो अपने–अपने विचारों पर अधिक बल देते हैं।

1.चमत्कारिक शाखा :– इस शाखा के लोग गुरु घासीदास को भगवान का दर्जा देते हैं और उनकी पूजा–पाठ, भक्ति–भजन, गुण–गान में लीन रहते हैं तथा उनके किये कार्यों को चमत्कारिक रूप में देखते हैं। यह भावना उत्पन्न होना भी स्वभाविक है। इनकी तादात बहुत संख्या में हैं। सभी अन्य धर्मो में भी लगभग इस प्रकार की शाखा होते हैं।

2. महामानव शाखा :– इस शाखा के लोग गुरु घासीदास को क्रांतिकारी महामानव के रूप में देखते हैं और उनके विचारों, किए गए कार्यों का अनुसरण करते हैं। इनकी तादात बहुत कम संख्या में हैं। ऐसे लोग उनके किए गए क्रांतिकारी कार्यों, योगदान को लोगों में बताने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोग उन्हें संत, गुरु या पथ–प्रदर्शक कहते हैं, जिनके दर्शन से क्रांति के बीज उभरे। जिन्होंने अपने अनुयायियों को आत्मसम्मान का जीवन जीना सिखाया। उन्होंने संघर्ष को नहीं छोड़ा।

जीवन परिचय

गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसंबर 1756 ई. में छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार ज़िले में गिरौद नामक गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम अमरौतिन तथा पिता का नाम मंहगूदास था। बाल्यकाल में माता का देहांत हो गया। उनके पिता द्वारा उनका लालन–पालन किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य की संत परंपरा में महान चिन्तक, समाज प्रवर्तक मे गुरु घासीदास का नाम अग्रणि व सर्वोपरि हैं। बाल्याकाल से ही गुरु घासीदास के ह्रदय में समाज परिवर्तन का भाव प्रस्फुटित हो चुका था। समाज में व्याप्त जातिवाद, छुआछुत, असमानता तथा अन्य कुप्रथाओं का बचपन से ही विरोध करते रहे।समाज को नई दिशा प्रदान करने में इन्होंने अतुलनीय योगदान दिया।1

छत्तीसगढ़ के प्राचीन राजधानी बौद्ध नगर सिरपुर में अंजोरी दास की सुपुत्री सफुरा से उनका विवाह हुआ था। उनका सिरपुर में आध्यात्मिक तरफ लगाव हुआ। उनके 4 पुत्र तथा एक पुत्री थी। क्रमशरू पुत्र 1– अमरदास 2– बालकदास 3– आगरदास 4– अडगडिहा दास, तथा पुत्री का नाम सुभद्रा थी।2 अमरदास की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई, द्वितीय पुत्र बालक दास उनके उत्तराधिकारी बने, उनका भी सामंतवादी, जातिवाद के पोषक सवर्णों ने धोखे से हत्या कर दिया था। गुरु घासीदास का भी कई बार हत्या का प्रयास किया। आज भी उनकी मृत्यु का राज रहस्यमय हैं। कुछ लोग सतलोक गमन की बात कर उसमे पर्दा डाल देते हैं। कुछ लोग कहते है कि अछप (गायब) हो गया।

गुरु घासीदास के जीवन से संबंधित समाज में भिन्न–भिन्न चमत्कारी किवंदंतियां (कहानी) प्रचलित है । 1. 6 माह मृत सफरा को जीवित करना 2. सांप काटे बुधारू को जीवित करना 3. मृत गाय को जीवित करना 4. भाटा के बाड़ी से मिर्चा उगाना 5. 1 डलिया धान 12 डोली में पुरोना (लगाना) 6. गरियार बैल को चलाना 7. बिना आग–पानी के खाना बनाना आदि.... चमत्कारी किवंदंतियां।3

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है महान लोगों के साथ आम जनता इसी प्रकार की अतिशयोक्तिपूर्ण चमत्कारी किवंदंतियां (कहानीओं) को जोड़ दिया करते हैं, तथा लोग भी आंख बंदकर के विश्वास करने लगते हैं। इन किवंदंतियां (कहानियों) का कोई वैज्ञानिक औचित्य नहीं होता है, लेकिन इस प्रकार उपमा देकर लोग अपने उद्धारक, पथ–प्रदर्शक को अलौकिक

व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार लेते हैं। वास्तव में इन चमत्कारों के पीछे महामानवों की महान उपलब्धियों को भूलाकर दरकिनार कर दिया जाता है केवल उनके पूजा–पाठ, भक्ति–भाव, गुण–गान में रत रहते हैं।4

छत्तीसगढ़ के वाशिंदे

लोगों में अक्सर सुनने को मिलता है कि सतनामी लोग नारनौल (हरियाणा) के रहने वाले थे। औरंगजेब से युद्ध के बाद सतनामी पलायन कर छत्तीसगढ़ आ गए तथा यत्र–तत्र निवास करने लगे। कुछ लोगों की मान्यता है कि भारतीय इतिहास में 1672 ई. में सतनामी विद्रोह दर्ज है, इस घटना को पढ़कर आज के कुछ पढ़े–लिखे लोग कहते हैं कि हमारे पूर्वज नारनौल के थे।5

छत्तीसगढ़ में सतनामी के प्राचीनतम बसाहट का वर्णन करते हुए श्जे एफ हैबिटश रायपुर गजेटियर 1869 ई. के पृष्ठ 33 में उल्लेख करते हैं कि 'सतनामी जिले की पुरातन निवासियों में से संबंध रखते हैं यद्यपि सतनामी बहुत अधिक संख्या में निवासरत है परंतु स्पष्ट रूप से यह नहीं बता सकते कि वे अथवा उनके पूर्वज छत्तीसगढ़ में कब आकर बसे संभवत उन्होंने अपने पूर्वज के आवर्जन के संबंध में कभी नहीं सुना है इसका कारण हो सकता है कि सतनामी छत्तीसगढ के मूलनिवासी में से हैं।' निश्चित रूप से पहले के लोग पढ़े–लिखे नहीं थे उनके पूर्वजों से जो कुछ भी जानकारी थी उनके अनुसार कहा करते थे कि, हमारे पूर्वज लोग छत्तीसगढ़ भूमि में 'भुरुहा काट' के वाशिंदे हैं अर्थात हम लोग (सतनामी) सदा से यही के मूलनिवासी हैं। मगर पता नहीं यहां के मूलनिवासी (सतनामी) अपनी पूर्वजों को छत्तीसगढ़िया स्वीकार करने में लज्जा क्यों महसूस कर रहे हैं? यह समझ नहीं आता कि हम क्यों स्वयं अपनी नासमझी से अपनी मौलिकता खत्म कर रहे हैं।6

गुरु घासीदास जी को प्रेरणा

1756 प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने भारत में अपना पैर जमाना शुरू कर दिया था, साथ ही 1 जनवरी 1818 भीमा कोरेगांव युद्ध में देश के सबसे बड़े शक्ति पेशवाओं की सत्ता खत्मकर दिया। अब देश में अंग्रेजों के सामने कोई प्रतिद्वंदी नहीं बचा था। 1 जनवरी 1818 के युद्ध के परिणाम स्वरूप भारत में अंग्रेजों का शासन मजबूत हुआ और सभी शूद्र जातियों ने अपने अस्तित्व को महसूस किया। भीमा कोरेगांव में पेशवा के 28000 सैनिकों को 500 महार सैनिकों ने छक्के छुड़ा दिए थे। इस संघर्ष की कहानी गुरु घासीदास सुने और उस घटना से बहुत उत्साहित हुए, जिसके कारण उनके द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन में गतिमान मोड़ आया। मूलनिवासी बहुजन समाज के लोगों में नई चेतना आई। सतनाम आंदोलन ने इंसान को इंसान होने की उम्मीद जगाई और सामंतवादी, वर्ण व्यवस्था को ललकारा। सामंतवादी व्यवस्था में निचली जाति के लोगों को किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं था, ना ही उनको सेना में भर्ती किया जाता था। लेकिन अंग्रेजों ने भारत में सत्ता स्थापित करने के लिए, यही के निचली जाति, निम्न तबके के लोगों को अपने सेना में भर्ती किया, और उन लोगों ने इन व्यवस्था को खत्म करने में तथा अंग्रेजों की सत्ता स्थापित करने में साथ दिया। अंग्रेजों का सत्ता स्थापित होने पर निचले तबकों के साथ उनका सहानुभूति का बर्ताव रहा।7

छाता पहाड़ में 'धुनी रमाने'(साधना–चिंतन)

मिथिहासिक बनाम ऐतिहासिक

उनके छमाही छाता पहाड़ जाने, जप–तप करने संबंधी बातों को पारंपरिक गीत, कथा, कहानियों में भी सुना जाता है। लेकिन उन कथा–कहानियों में उसी तरह के जप–तप करने की बातें हैं, जैसे कि बहु प्रचारित पौराणिक ग्रंथों में वर्णित व उनके वाचकों द्वारा कहा जाता है। ब्रिटिश अधिकारियों के सर्वे–दस्तावेजों में श्धुनि रमानेश वाली बातों का जिक्र ही नहीं है और न ही विश्वकोष लेखकों द्वारा धूनी रमाने (जप–तप) आदि का वर्णन नहीं मिलता। यह सब बातें बाद मे फैलाया गया। लेकिन गुरु घासीदास किनके लिए चिंतन के लिए उद्धत हुए। तात्कालीन उपनिवेश कालीन प्रमुख दस्तावेजों में उल्लेख मिलता है कि, गुरु घासीदास आम जनता के गरीबी, कष्टों से अत्यंत व्यथित थे। वह इनका जल्द से जल्द निदान चाहते थे।8

जब हम गुरु घासीदास को युगपुरुष कहते है, तो इसका मतलब होता है, उस युग के सामने उभरे सभी प्रश्नो को हल करने वाला महापुरुष। लेकिन गुरु घासीदास ने अपने तप (चिंतन–साधन) का उद्देश्य व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, निजी स्वार्थ–साधने के लिए नहीं किए, न ही ईश्वरी स्वर्ग–सुख की प्राप्ति के लिए, बल्कि लोगों की इसी जीवन में दुःख निवारणर्थ यहीं के दुनियावी (स्वर्ग का नहीं) प्रश्नों को हल करने के लिए आगे आये। उनका वैचारिक दार्शनिक प्रश्नो को खोजना जानना ही उनका का मुख्य उद्देश्य था। क्योंकि इन प्रश्नो के हल किये बिना पीड़ित मानवता की दुखों से मुक्ति नहीं हो सकती। उस दौर में गुरू घासीदास का लोगो के दुखो कष्टो के प्रति संवेदनशील होना अपने आप में अनूठी ही कहि जायेगी।

गुरु घासीदास एक ईमानदार पर्वेक्षक की तरह प्रत्येक चीजों का निरीक्षण किया। उनके दिल दिमांग में सिर्फ एक ही बात थी कि, सभी बातों को जानने–समझने में जो भी युक्ति करना पड़े वह सब किया जाए। इनके अलावा उसके जीवन मे कोई और इच्छा नहीं रह गई थी। वे अपने सत्संगी जीवन को त्यागकर लोगों के लिए मौलिक रूप से नई सोच समझ व कार्य के लिए तत्पर थे। समाज में व्यापक परिवर्तन लाने के लिए एक पक्षीय चिंतन या किसी जाति–समूह के लिए थोड़ा सा सोच पैदा करने मात्रा से संभव नहीं हो सकता।

गुरु घासीदास सत्संग, लोक संपर्क के ज्ञान अनुभव से सम्पन्न थे, लेकिन निश्चित उद्देश्य प्राप्ति के लिए निराकर्णात्मक ज्ञान को सूत्रबद्ध करने चिंतन के लिए लक्ष्य बनाया। यहीं ज्ञान से वे आगे चलकर ऐतिहासिक कार्य को संपन्न कर पाए।9

गुरु घासीदास ने लोगों के दुखों के निवारणार्थ गहन चिंतन के लिए छमाह समय का लक्ष्य बनाया था। उन्होंने विचार चिंतन के लिए छाता पहाड़ का ही चयन क्यों किया? वहां उन्होंने कौन सा कार्य किया? क्या वह अकेले रहें या साथ में कोई और भी थे? विभिन्न सवाल उठते हैं। चिंतन के लिए छाता पहाड़ का चयन करने का उद्देश्य से यही लगता है कि, उस दौर में मराठा(पेशवा) आदिवासियों के बीच हो रहे सैनिक झड़प आदि से (डर से नहीं,विशिष्ट कार्य संपादन हेतू) शांत वातावरण एकांत स्थान तथा सुरक्षित दूरी पर रहकर चिंतन किया जाए। चिंतन का लक्ष्य पाने में व्यवधान न हो। यदि वह अकेले एकांतवास करना चाहते तो और भी नजदीक की स्थानों का चयन कर सकते थे, मगर छाता पहाड़ के चयन से तो यही लगता है कि, उनका छमाही कार्य अकेले का नहीं था, बल्कि बहुत ही विश्वास पात्र सदस्यों का संघ चिंतन पर रहें। सदस्यों का कार्य बौद्धिक क्रियाकलाप के साथ शारीरिक दक्षता (मुश्किल हालातों से मुकाबला हेतु) विकास करना भी होगा। जिसके लिए पर्याप्त गोपनीयता सुविधा वाली सोनाखान राज के विशाल जंगल (छाता पहाड़) अधिक उचित स्थल था।10

गुरु घासीदास ने छाता पहाड़ जाने के दौरान जनवरी 1820 ई.में उसने लोगों से जो बातें कहीं उसमें निम्न बातें प्रमुख थी।

1.मैं छाता पहाड़ चिंतन के लिए इसलिए जा रहा हूँ ताकि अपने लोगों के दुख–तकलीफ के निराकरण के लिए एक समुचित मार्ग खोज सकूं।

2.यदि मैं उचित मार्ग की खोज नहीं कर सका तो स्वयं को हिंसक पशुओं के हवाले कर दूंगा अर्थात जिंदा नहीं रहूंगा।

3.यदि मैं उचित मार्ग खोज सका तो उसे सुनने समझने के लिए छरूमाह के बाद वापसी पर अधिक संख्या में लोग गिरौद में मिले।

गुरु घासीदास का चिंतन के लिए जाना एक सोची समझी रणनीति के तहत था। वह इसे अपने जीवन के लिए निर्णायक घटनाक्रम बनाकर चल रहे थे। गुरु घासीदास के उद्देश्यों में पेशवा आतंक के खिलाफ एक प्रयास नजर आता था। इस कारण सोनाखान राजा व आदिवासी जनता का कूटनीति, रणनीति समर्थन स्पष्ट रूप से दिखता है। क्योंकि सोनाखान के राजा व प्रजा, मराठा शासन (पेशवा) के आतंक से मुक्ति चाहते थे। छाता पहाड़ स्थल सोनाखान राजा के क्षेत्र में आता था। बिना राजा के समर्थन के छमाह का कार्यक्रम संपादन नहीं किया जा सकता। इस महान कार्य को हल्का (छुपाने हेतू) साबित करने के लिए विरोधी लोगों ने इसे महज एक जप–तप करने का घटनाक्रम बताया है। वह नहीं चाहते कि गुरु घासीदास के द्वारा चिंतन कार्य को ऐतिहासिक मिले। इसीलिए सभी कथावाचक (जाने–अनजाने में) अपने कथित गुरु पंडितों के कहेनुसार ष्बारा गाड़ी लकड़ी में धूनी रमाने वाले साधुमुनिष् की काल्पनिक कथा कहानी का वर्णन करते हैं, उसे ही सही बोल झूठ का भ्रमजाल प्रचारित करते हैं।11

'मनके–मनके एके बरोबर'

(मानव–मानव एक समान) का आन्दोलन

गुरु घासीदास का मानना था कि मानव–मानव में कोई भेद नहीं होता ऊंच–नीच, जात–पात, भेदभाव इंसानो ने बनाया है, मानव मानव में कोई भेद नहीं होता। सभी मानव एक समान होते हैं। जाति जीव–जंतु में होती है, इंसानों में नहीं। चाहे कोई भी समाज हो, सामाजिक रुप से समान हैसियत रखता है। गुरु घासीदास के संदेशों का समाज के पिछड़े समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा। आप कल्पना कर सकते हैं जब इस देश में कोई सार्वभौम कानून नहीं था, उस समय गुरु घासीदास ने श्मनके–मनके एके बरोबरश का नारा दिए। इस क्रांतिकारी विचार का उन्होंने 1820 से 1830 तक बहुत जोर दिये। इस देश में बौद्धिक क्रांति का सूत्रपात किए। गुरु घासीदास जानते थे, अज्ञानता प्रमुख समस्या। जब तक लोग शिक्षित नहीं होंगे और जात– पात में बटे रहेंगे तब तक अपने हक, अधिकार से वंचित रहेंगे। इसलिए उन्होंने सभी समुदाय के लोगों को जोड़ने का कार्य किया और समाजिक तथा आर्थिक मुक्ति का आंदोलन चलाया। गुरु घासीदास का आंदोलन छत्तीसगढ़ी में होने के कारण अंग्रेज शासन आंदोलन को समझ नहीं पा रहे थे। अंग्रेजों ने इस आंदोलन को समझने का प्रयास किया, बाद में श्मनके–मनके एके बरोबरश को अंग्रेजी में अनुवाद कराया। अंग्रेजो को इस आंदोलन की बात समझ में आया कि, गुरु घासीदास समान भागीदारी, हक और अधिकार की बात कर रहे हैं। तब गुरु घासीदास को अंग्रेजो ने, शासन के पास अपनी बात रखने के लिए 28 जून 1820 को नागपुर बुलाए। गुरु घासीदास समाज के सम्मान, हक और अधिकार के लिए छाता पहाड़ के रास्ते नागपुर गए। वहा अंग्रेजी शासन के सामने 'मनखे–मनखे एके बरोबर' की बात करते हुए निम्न मांगे रखी।

1. सब के लिए शिक्षा का अधिकार

2. सब के लिए जमीन व रोजगार का अधिकार

3. सब के लिए स्वास्थ्य व सुरक्षा का अधिकार12

गुरु घासीदास ऊपर तीनों बातों से अंग्रेजों को सहमत कर वापस गिरौदपुरी आए। 28 दिसंबर 1820 को गिरौदपुर में तब उन्हें देखने व सुनने के लिए लगभग ढाई लाख लोग इकट्ठा हुए थे। उस समय छत्तीसगढ़ की जनसंख्या लगभग 5,71,915 थी।

उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि, यदि आपको मेरे द्वारा लाए गए अधिकार का लाभ लेना है तो मेरी सात बातों को मानना होगा।

1. मादक पदार्थों का सेवन नहीं करना ।

अर्थात समाज को शराब एवं नशे से दूर रखना चाहते थे।

2. मांस भक्षण नहीं करना

अर्थात जीव हत्या पर पाबंदी लगाना चाहते थे।

3. जाति–पाति नहीं मानना, संपूर्ण सामाजिक समानता।

अर्थात जाति विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे।

4. मूर्ति पूजा का निषेध ।

अर्थात धार्मिक, अंधविश्वास,रूढ़िवादी परंपरा से दूर रखना चाहते थे।

ये मंदिरवा मा का करें जाबो । अपन घट के ही देवा ला मानबो।।

5. गायों को हल में जोतने पर निषेध।

अर्थात महिला जातियों को सम्मान की जिंदगी जीने का अधिकार चाहते थे।

6. दोपहर बाद हल चलाने का निषेध, दोपहर के बाद खेतों पर भोजन ले जाने की मनाही।13

बंधुआ मजदूरी से मुक्ति तथा महिलाओं का रक्षा करना चाहते थे।

दोपहर में हल जोतने से मना किया क्योंकि दो प्रकार के नागर चलते थे 1. दो बैल का हल (कच्चा नागर)

2. चार बैल का हल (पक्का नागर)

चार बैल का हल रखने वाला बड़ा किसान माना जाता था, जिससे लगान ज्यादा देना पड़ता था। इससे बचने के लिए किसान पहला हल 3 घंटे तथा फिर दूसरा 3 घंटे इस प्रकार चलाते थे लेकिन आदमी एक ही होता था। दोपहर में खेतों पर भोजन ले जाने की मनाही गौर करने वाली बात है। खेतों पर भोजन ले जाने का काम औरतें करती थीं, और औरतों

के साथ उच्च जातियों की बदसलूकी आम बात थी। महिलाएं सामंतों की हवस का शिकार होती थीं, जिसे उन्होंने अपनी नियति मान लिया था। संभवतरू गुरु घासी दास ने इसी स्थिति से अपनी महिलाओं की सुरक्षा के लिए यह नियम बनाया था।

7. सतनाम का ध्यान करना ।

अर्थात सदैव सच का साथ देना, सत्य बोलना सिखाना चाहते थे।14

'सतनाम पंथ' की स्थापना 1820 ई.

गुरु घासीदास उपरोक्त सात संदेशों को मुख्य आधार मानकर, जनसमूह को संबोधित करते हुए। सबसे पहले आसपास के अनेकों समुदायों के सामाजिक चिंतकों को एकत्रा कर उसमें सत्य चेतना जागृत कर 'सत्यज्ञान के प्रकाश' को आत्मसात कर जनहित के लिए 'जाति विहिन समाज की स्थापना' किया। 'मनखे–मनखे एके बरोबर' (इंसान इंसान सब एक हैं) उन्होंने समाज में चेतना जगाया और मानवता पर आधारित समाज व्यवस्था का निर्माण किया। फल स्वरुप श्सतनाम पंथश चारों ओर तेजी से फैलने लगा। गुरु घासीदास ने 'सतनाम' अर्थात 'सत्य' और 'समानता' के आधार पर छत्तीसगढ़ में 'सतनाम पंथ' की स्थापना किया।

'सतनाम धाम' की स्थापना 1840 ई.

रायपुर से 56 किलोमीटर दूर उत्तर–पूर्व में पलारी के पास भंडार नामक गांव स्थित है। भंडार गांव की मालगुजारी लोहार परिवार के पास था। रायसिंग (झुमुक) लोहार गौटिया उनकी पत्नी बिरझा गौटिनीन थे, उनके बाल बच्चे नहीं थे। लोहार गौटिया को जब पता चला कि गुरु घासीदास जी उनके गांव के पास में हैं तो वह गुरु को अपने निवास चलने का निवेदन किया। उन्होंने निवेदन स्वीकार कर उनके निवास स्थान गए, सपरिवार गुरु का बहुत ही आदर सम्मान से स्वागत किया। गुरु का क्रांतिकारी विचार सुने तथा उनके विचार से प्रभावित होकर भंडार गांव का स्वामित्व गुरु घासीदास को सौंप दिया। गुरु ने 1840 में भंडार में लोहार गौटिया, लोहारिन गौटिनीन के सहयोग से श्सतनाम धामश की स्थापना की तब से भंडार गांव को 'सतनाम धाम भंडारपुरी' कहलाने लगा।15

गुरु गद्दी की स्थापना

गुरु घासीदास के समय देश में राजतंत्र चलता था। राजगद्दी में जो भी बैठता था, उनकी हुकूमत चलता था। उसी के इशारे से राज्य का संचालन होता था। जहां रानी के पेट से पैदा होने वाली संतान को ही राजा बनाया जाता था। उस दौर में उन्होंने इशारा किया कि आपकी सभी समस्याओं का समाधान राजगद्दी में निहित है। अगर सभी संगठित होकर, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सत्ता अपने हाथों में ले लो। शासन सत्ता से ही आपकी तकदीर बनेगी। यह उद्देश्य रखकर गुरुगद्दी की स्थापना किया। अपने पुत्र बालक दास को 'गुरुगद्दी' में बैठाया तथा हाथ में तलवार दिया, हाथी की सवारी करवाया और समाज को कहा कि ऐसा गुरु और ऐसा गद्दी बनाओ। अर्थात समाज को राजा बनाने का संदेश दिया। छत्तीसगढ़ में राजा गुरु बालक दास रावटी लगाकर समाज को समझाने का कार्य किया। इस क्रांतिकारी कार्य को देखकर अंग्रेजों ने राजा गुरु बालक दास जी को 1853ई. में राजा की पदवी से सम्मानित किया।

आज भी समाज गुरु गद्दी का मतलब नहीं समझ पाया है। गुरु घासीदास ने जिसे छोड़ने को कहां उसी को बढ़ावा दिया जा रहा। अपने सतनाम भवनो या घरों में 'गुरु गद्दी' बनाने लगा हैं तथा उसकी पूजा–पाठ में लगें है। आज तक हम गुरु गद्दी बनाने के महत्व को समझ नहीं पाए।16

मुखिया बनाने का आंदोलन

गुरु घासीदास जब समाज को जागरूक करने में लगे थे तब उन्होंने देखा कि समाज में मेरे अलावा और कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है जो समाज को जागरूक करें तथा समाज का नेतृत्व करें। इस कमी को दूर करने के लिए उन्होंने समाज में नारा दिया :–

'नवा जागरण, नवा बिहान, अऊ सबो बनव सियान।'

अर्थात नया जागृति , नया सोच, और सभी मुखिया बनो। समाज में मुखिया बनाने के लिए उन्होंने पंथी दलों को आह्वान किया, गांव–गांव जाओ और रात भर पंथी गीत नृत्य (जनजागृति) के माध्यम से समाज को जागृत करने का कार्य करो। जब रात भर जागरण के बाद जो सुबह होगा वह सभी के लिए नया सवेरा होगा। फिर सबके मन में सियान (मुखिया) बनने की सोच पैदा होगी।17

'सतनाम रावटी' (सभा)

गुरु घासीदास ने सतनाम मत को सरल शब्दों में व्यक्त करके भूतपूर्व परिवर्तन किया। आश्चर्यजनक यह है कि जिन गांव की उन्होंने यात्रा की उन्होंने वहां की जन समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया। उनकी इस प्रकार की यात्राओं को रावटी (पड़ाव) कहते थे। सात रावटी (पड़ाव) का उल्लेख मिलता है। उन्होंने निम्न स्थानों में रावटी (पड़ाव) लगाया दलहा पोड़ी (जांजगीर–चांपा), बस्तर (दंतेवाड़ा), कांकेर, पानाबरस, डोंगरगढ़, राजनांदगांव, भोरमदेव (कवर्धा) आदि तथा मंडला, बालाघाट, जबलपुर, अमरकंटक में भी सतनाम पंथ का प्रचार किया था।18

सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक सुधार के लिए निम्न कार्य किए :–

1. जाति प्रथा और छुआछूत का उन्मूलन।
2. धार्मिक और सामाजिक अंधविश्वास का उन्मूलन।
3. बलि प्रथा का उन्मूलन और गौवध तथा पशु संरक्षण।
4. नारी उत्थान और टोनही प्रथा का उन्मूलन।
5. बैठ बिगारी और बंधुआ प्रथा का उन्मूलन।
6. कर्ज दारी व्यवस्था का उन्मूलन।
7. नशा प्रवृत्ति और मादक पदार्थों का विरोध।
8. जन्म के स्थान पर कर्म सिद्धांत का समर्थन।
9. अपनी भूमि संपत्ति पर कब्जा का आंदोलन।

10. सात्विक आहार व्यवहार का समर्थन और दूषित जल और भोजन के सेवन का विरोध।

11. ज्ञान के एकाधिकार का विरोध और सार्वजनिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण का समर्थन।

12. समान न्याय व्यवस्था का समर्थन।

13. मानव मन में सत्य और अहिंसा का पुनर्स्थापना।

14. भिछा प्रवृत्ति पर रोक।

15. चोरी प्रवृत्ति एवं अनैतिक कार्यों का विरोध।

16. लगान व टैक्स देना बंद कर दिया गया।19

'पंथी गीत' व 'पंथी नृत्य'

गुरु घासीदास के अनुयायियों ने जनजागृति फैलाने के लिए गीतों की रचना किया। उन्होंने सतनाम पंथ चलाएं इस वजह से उन गीतों को पंथ गीत अर्थात 'पंथी गीत' तथा नृत्य को 'पंथी नृत्य' कहा गया।

पंथी का शाब्दिक अर्थ राहगीर होता है, पथ शब्द से ही पंथी का निर्माण हुआ है। सतनाम मार्ग में चलते हुए, सतमार्गी (सतराही) सतनाम के सिध्दान्तों का प्रचार करते हैं। पंथी गीत व नृत्य की शुरुआत एक क्रांत्तिकारी विचारधारा को लेकर हुआ। जिसमें गुरु घासीदास के जीवन चरित्र व दर्शन पर, सामाजिक क्रांति, अध्यात्मिक जागृति, वैज्ञानिक विचारधारा जिसके द्वारा मानव समाज में फैली कुप्रथाओं का विरोध, सांस्कृतिक कला प्रदर्शन के रूप में किया जाता था। लोगों को अंधविश्वास, पाखंड, छुआछूत, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जनजागृति फैलाने के लिए गीत, संगीत, नृत्य से बहुत ही आसान तरीका से समझने लगते है। जिसके माध्यम से लोग जल्दी आकर्षित होते हैं। बच्चे ही नहीं अपितु बुजुर्ग भी आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।20 पंथी नृत्य में 15 से 20 लोगों का दल होता है जो पंथी गीत की धुन में नृत्य करते हुए अपना कला दिखते है। गुरु घासीदास के समय 20 से 35 वर्ष के युवाओं का पंथी दल गांव,गली, मोहल्लों में पंथी नृत्य के माध्यम से जागृति फैलाने का कार्य करते थे। उस दौर में छुआछूत, पाखंड, अंधविश्वास, कुर्तियां, असमानता चरम पर था। सामंतवादी के सामने निम्न तबके के लोगों को सिर ऊपर उठाने की अधिकार नहीं था। इस असमानता के खिलाफ विरोध का बिगुल बजने लगा। उस दौर में सामंतवादी व्यवस्था के पोषकों के खिलाफ उनके गली, मोहल्लों से पंथी गीत की धुन में नृत्य करते हुए अलग–अलग कला दिखाते हुए जनजागृति फैलाते आगे बढ़ते थे। किसी की हिम्मत नहीं होती थी उन्हें कोई रोक दे। पंथी नृत्य दल असमानता के खिलाफ लड़ने वाले सेना का कार्य करते थे। अतरू पंथी अन्याय के विरुध्द न्याय के समर्थन में खड़े होने की एक मंचीय साहसीक कला है।

आर्थिक मुक्ति का आंदोलन

गुरु घासीदास का आंदोलन, 'मनखे–मनखे एके बरोबर', नारा के साथ, जन चेतना, बौद्धिक क्रांति के साथ आर्थिक मुक्ति का आंदोलन छत्तीसगढ़ में बड़े जोर–शोर से चल रहा था। ब्रिग्स 1920–223 ने सतनामी आंदोलन को एक आर्थिक संघर्ष माना। ग्राण्ट ने यह माना कि भारतवर्ष के सभी आंदोलनों में सबसे अधिक चमत्कारी तथा रोचक छत्तीसगढ़ के सतनामियों का धार्मिक तथा सामाजिक विद्रोह था। उस समय उत्तर भारत में इससे बड़ा आंदोलन कभी नहीं हुआ था।

प्राचीन काल से अस्पृश्य जातियों को भू स्वामी का अधिकार नहीं था। मनुस्मृति के अनुसार – ''कोई भी स्वर्ण किसी शुद्र के संपत्ति को हड़प सकता था, शुद्र को संपत्ति का अधिकार नहीं था, यदि उसने संपत्ति अर्जित कर ली हो तो निरूसंदेह उसका मालिक उसकी संपत्ति को छिन सकता था।'' इस असमानता व्यवस्था के खिलाप गुरु घासीदास ने सतनाम आंदोलन चलाया। उन्होंने गुलामी की बंधन को तोड़ दिया तथा वह बंधन मुक्त हो गये। उन्होंने सब के लिए रोजगार व जमीन के लिए आर्थिक मुक्ति आंदोलन चलाया। उनके आन्दोलन स्वरुप 1840 में मालिक मकबूजा कानून बना। नारा दिया– ''जो जिस जमीन पर काबिज है, वह उस जमीन के मालिक होगा।'' वा 'भूमि उसी की है, जो उसे जोते' इस तरह गुरु घासीदास कमजोर वर्गों को हक और अधिकार दिलाने का ऐतिहासिक कार्य किया। उस नारा तथा आंदोलन के कारण छत्तीसगढ़ में लगभग 362 गांव का मालगुजार सतनामी बन गए थे।21

जय स्तंभ (जैतखाम) की स्थापना

गुरु घासीदास ने 1849 ई. सतनाम पंथ के प्रतीक के रूप में में

'जय स्तंभ' (जैतखाम) की स्थापना किया।

जैतखाम :– लकड़ी का बड़ा सा खंभा होता है जिसे चबूतरा में गड़ाया जाता हैं। उसे सफेद में रंगकर, उसमें सफ़ेद का झंडा लगाया जाता है।22 जिस प्रकार सम्राट अशोक ने शांति की राह में चलकर विजय प्राप्त किया था उसके प्रतीक के रूप में ष्अशोक स्तंभष् (विजय स्तंभ) का निर्माण किया गया था। 1 जनवरी 1818 में भीमा कोरेगांव युद्ध में अंग्रेज सेना के महार सैनिकों ने पेशवाओं को हराकर विजय प्राप्त किया था। उसकी याद में 1822 में 'विजय स्तंभ' का निर्माण भीमा कोरेगांव (पूना) में किया गया था। ठीक उसी प्रकार सतनाम पंथ (सतनाम आंदोलन के विजय) के प्रतीकात्मक रूप 'जय स्तंभ' (जैतखाम) को गड़ाया (निर्माण) जाता हैं। जब इनमें झंडारोहण किया जाता है तब कोई नहीं कहता 'जैतखाम की जय' सभी कहते हैं 'गुरु घासीदास की जय' मालूम पड़ता है कि गुरु घासीदास विजय के प्रतीक है, जबकि जैतखाम न हीं घासीदास के प्रतीक है न ही घासीदास जैतखाम के प्रतीक है। अतएव गुरु घासीदास ने अपने सात संदेश श्सतनाम पंथश् के प्रतीकात्मक रूप जैतखाम को माना। जिसे 'सतनाम पंथ' प्रतीक के रूप में स्वीकार किया।23

गुरु घासीदास जयंती की शुरुआत

1938 ई. में दादा नकुलदेव ने अपने ग्रह ग्राम भोरिंग (महासमुन्द) में शुरुआत किया था।24 गुरु घासीदास की जानकारी और जयंती का सुझाव बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने दिया था।25 कुछ लोग एमडीएम गुरुजी का भी उल्लेख करते हैं। मान्यवर कांशीराम साहब ने उनके कार्यो और विचारों को पूरे देश और विदेशों में प्रचारित करने का महान कार्य किया।26

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मार्कंडेय, के.आर. (संक), छत्तीसगढ़ राज्य और सतनामी समाज पुण्य स्मृति ग्रंथ, प्रकाशक तामस्कर टंडन संयोजक छत्तीसगढ़ सतनामी समाज, 2001 पृ. – 11

2. सतनाम दर्शन स्मारिका–2012, प्रकाशक गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, रायपुर छत्तीसगढ़, 2012 पृ. – 20

3. मनहर, नम्मूराम, सतनाम, पत्रिका प्रकाशक गुरु घासीदास साहित्य संस्थान, भिलाई नगर, दुर्ग, 2000 पृ. – 9

4. सोनी, डॉ. जे. आर. , सतनाम पोथी, प्रकाशक गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी राजेंद्र नगर रायपुर, छत्तीसगढ़, 2009 पृ. –12

5. स्वरूप, सर्वोत्तम, गुरु घासीदास और उनका सतनाम आंदोलन, नई दिल्ली, 2019 पृ. – 35

6. वहीं,

7. जाटवर, रमेश (संक), बहुजन समाज को कैडर क्यों और कैसे?, बामसेफ इकाई बालको, कोरबा, 2019 पृ. –78

8. सुबोध,लखन, गुरु घासीदास सेवादार संघ कैडर क्लास, गुरु घासीदास सेवादार संघ, बिलासपुर छत्तीसगढ़, 2012 पृ.– 257

9. वहीं,

10. वहीं ,

11. वहीं ,

12. जाटवर, रमेश (संक), बहुजन समाज को कैडर क्यों और कैसे?, बामसेफ इकाई बालको, कोरबा, 2019 पृ.– 88

13. वहीं,

14. आजाद, हरविंद्र कुमार, बहुजन नायकों का इतिहास, लोटस एंड कोबरा पब्लिशिंग हाउस नागपुर, 2020 पृ. – 110

15. शुक्ल, डॉ. हीरालाल, गुरु घासीदास संघर्ष संबंध में और सिद्धांत, सिद्धार्थ बुक दिल्ली, 2020 पृ. – 166

16. जाटवर, रमेश (संक), बहुजन समाज को कैडर क्यों और कैसे?, बामसेफ इकाई बालको, कोरबा, 2019 पृ.– 104

17. वहीं, 103

18. शुक्ल, डॉ. हीरालाल, गुरु घासीदास संघर्ष संबंध में और सिद्धांत, सिद्धार्थ बुक दिल्ली, 2020 पृ. – 163

19. भारती, नरेंद्र, गुरु घासीदास और सतनामी आंदोलन के ऐतिहासिक साक्ष्य, बुक्स क्लिनिक पब्लिशिंग बिलासपुर , छत्तीसगढ़ पृ.– 50

20. सोनवानी, डॉ. आई. आर. (संपा), सत्य–प्रभात, अंक–2 प्रकाशक सत्य–दर्शन राष्ट्रीय साहित्य शोध संस्थान,राजनांदगांव छत्तीसगढ़, 2001 पृ.– 33

21. शुक्ल, डॉ. हीरालाल, गुरु घासीदास संघर्ष संबंध में और सिद्धांत, सिद्धार्थ बुक दिल्ली, 2020 पृ. – 154

22. स्वरूप, सर्वोत्तम, गुरु घासीदास और उनका सतनाम आंदोलन, नई दिल्ली, 2019 पृ. – 113

23. भतपहरी, डॉ. अनिल कुमार, गुरु घासीदास और उनका सतनाम पंथ, सर्वप्रिय प्रकाशन दिल्ली, 2019 पृ –188

24. खुंटे, टी. आर.,सतनाम दर्शन, स्वागत सतनाम कल्याण एवं गुरु घासीदास चेतना संस्थान, भिलाई पृ. – 209

25. एफ.आर., जनार्दन, संविधान दिवस (26 नवंबर 1949) के संदर्भ में मूलभूत अधिकार–जागृति अभियान, संविधान दिवस आयोजन समिति, भिलाई, 2019 पृ. – 3

26. एफ.आर., जनार्दन, सतनाम मिशन एवं भारतीय संविधान के परिपेक्ष में गुरु घासीदास जयंती की 262 वी जयंती वर्ष एवं गुरु घासीदास जयंती प्रारंभ के 80 वर्ष (सन 2018) के अवसर पर गुरु घासीदास जयंती तब से अब तक आगे कैसे? विषय पर समसामयिक चिंतन–मनन, पत्रक, भिलाई छत्तीसगढ़, 2018 पृ.–5

साक्षात्कार

1. श्री टी. आर. खूंटे – साहित्यकार

2. श्री वकील के. आर. मारकंडे – साहित्यकार

3. श्री डॉ. शंकर लाल टोडर – साहित्यकार

4. श्री दाऊराम रत्नाकर – प्रभारी बहुजन समाज पार्टी (छत्तीसगढ़)

5. श्री दूजराम बौद्ध – प्रदेश प्रभारी बहुजन समाज पार्टी (छत्तीसगढ़)

6. श्री इंजीनियर रामेश्वर खरे पूर्व विधायक सीपत (छत्तीसगढ़)

7. श्री बीरेंद्र ढीढ़ी – प्रपौत्र नकुलदेव जी (छत्तीसगढ़)